राज्य शिक्षा केंद्र
स्कूल शिक्षा विभाग
मध्य प्रदेश

समग्र शिक्षा

DIKSHA

15 अक्टूबर 2020- 16 फ़रवरी 2021

CM RISE नए क्षितिज | डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण

एन सी ई आर टी NCERT

NISHTHA ONLINE

हमारे शिक्षक
हमारे प्रेरणास्त्रोत

निष्ठा ऑनलाइन प्रशिक्षण पर शिक्षकों के विचार

हम शिक्षक हैं - हम सिखाते ही नहीं, सीखते भी हैं!

...और अन्य शिक्षकों के विचार

peepul™

SBI MUTUAL FUND
A PARTNER FOR LIFE

SBI FOUNDATION
Service Beyond Banking
...के सहयोग से

हमारे शिक्षक, हमारे प्रेरणास्त्रोत

एक परिचय

Covid 19 के दौरान शिक्षकों के ज्ञान व कौशलों को सतत रूप से समृद्ध करने के उद्देश्य से National Council of Educational Research and Training (NCERT) द्वारा दीक्षा पोर्टल पर कक्षा 1 से 8 को पढ़ाने वाले समस्त शिक्षकों हेतु निष्ठा (NISHTHA) ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम 16 अक्टूबर 2020 से प्रारंभ किया गया। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम अंतर्गत कुल 18 मॉड्यूल लॉन्च किए गए। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रदेश के शिक्षकों ने एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण के माध्यम से स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु डिजिटल माध्यमों से सीखने-सिखाने की विधियों व विषयवार कठिन अवधारणाओं पर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रदेश में सी एम राइज़ डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण पूर्व से ही संचालित किया जा रहा था तथा प्रशिक्षणों पर शिक्षकों के अनुभवों व विचारों को साझा करने हेतु राज्य स्तर से डेशबोर्ड प्रकाशित किये जा रहे थे, जिस पर प्रतिदिन संचालित कोर्स में शिक्षकों का पंजीयन एवं कोर्स पूर्णता के प्रतिशत की स्थिति और शिक्षकों के विचारों को संकलित किया जाता था। इसी प्रक्रिया को निरंतर रखते हुए निष्ठा ऑनलाइन प्रशिक्षण पर भी पीपल टीम द्वारा शिक्षकों से चर्चा प्रारम्भ की गयी और शिक्षकों के द्वारा निष्ठा प्रशिक्षण मॉड्यूल पर उनके विचार डेशबोर्ड के माध्यम से साझा किए जाने लगे।

कार्यक्रम अंतर्गत 18 कोर्स पर 50 से अधिक शिक्षकों ने अपने विचार इस डैशबोर्ड के माध्यम से साझा किए है। शिक्षकों द्वारा इस प्रयास को प्रशंसा मिली है, उनके अनुसार यह प्रयास प्रदेश के शिक्षकों के अनुभवों एवं विचारों के आदान प्रदान हेतु एक नवाचारी प्रयास है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षकों को अपने विचारों को अभिव्यक्त करने हेतु एक मंच मिला है।

हम इन शिक्षकों को कार्यक्रम के प्रति उनके समर्पण और समर्थन के लिए धन्यवाद देते हैं और आशा करते हैं कि आप शिक्षा के माध्यम से देश के भविष्य को दिशा देने का अपना कार्य जारी रखेंगे।

निष्ठा प्रशिक्षण कार्यक्रम

NISHTHA ONLINE

कोर्स जिन पर शिक्षकों के विचार इस पुस्तिका में सम्मिलित किए गए

मॉड्यूल	निष्ठा प्रशिक्षण मॉड्यूल	मॉड्यूल पूर्ण करने वाले शिक्षकों की संख्या
1	पाठ्यचर्या और समावेशी कक्षा	2,57,751
2	स्वस्थ विद्यालयी परिवेश निर्मित करने के लिए व्यक्तिगत-सामाजिक योग्यता विकसित करना	2,57,441
3	विद्यालय में स्वास्थ्य और कल्याण	2,54,828
4	शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में जेंडर आयामों की प्रासंगिकता	2,55,586
5	शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन में आई.सी.टी. (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी) का समन्वय	2,53,392
6	कला समेकित शिक्षा	2,54,398
7	विद्यालय आधारित आकलन	2,56,216
8	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षाशास्त्र	2,56,698
9	गणित का शिक्षाशास्त्र	2,55,081
10	सामाजिक विज्ञान का शिक्षणशास्त्र	2,53,259
11	भाषा शिक्षण शास्त्र	2,52,269
12	विज्ञान का शिक्षाशास्त्र	2,50,166
13	विद्यालय नेतृत्व-संकल्पना और अनुप्रयोग	2,50,878
14	विद्यालयी शिक्षा में नयी पहलें	2,50,427
15	पूर्व-प्राथमिक शिक्षा	2,48,670
16	मापदंड-पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा	2,50,997
17	कोविड-19 परिदृश्य: विद्यालयी शिक्षा में चुनौतियों का समाधान	2,50,334
18	अधिकारों की समझ, यौन शोषण और पा◌ॅक्सो अधिनियम 2012	2,49,521

हमारे शिक्षक, **हमारे प्रेरणास्त्रोत**

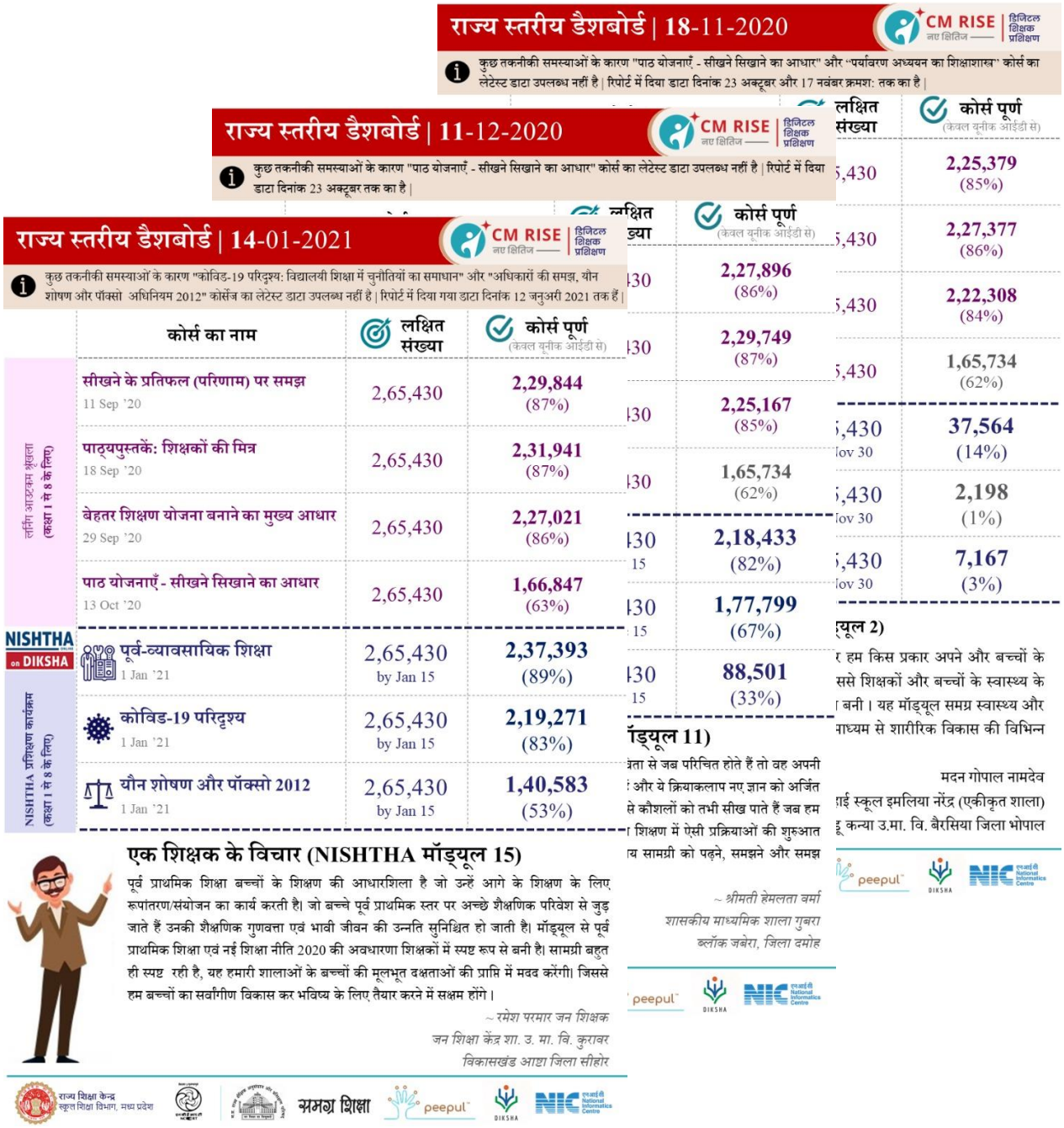

निष्ठा डेशबोर्ड के कुछ उदाहरण

राज्य के शिक्षकों के विचारों, फीडबैक तथा उनके अनुभवों को जानने तथा उसे प्रदेश के अन्य शिक्षकों से साझा करने हेतु **राज्य-स्तर से नियमित डेशबोर्ड** प्रकाशित किया जाता है। कार्यक्रम अंतर्गत **18 मॉड्यूल्स पर 51 शिक्षकों ने अपने विचार इस डेशबोर्ड के माध्यम से साझा किए हैं**

मदन गोपाल नामदेव शा.हाई स्कूल इमलिया नरेंद्र (एकीकृत शाला) जनशिक्षा केंद्र शा. सरोजनी नायडू कन्या उ.मा. वि. बैरसिया जिला भोपाल

स्वास्थ्य और कल्याण की अवधारणा को समझकर हम किस प्रकार अपने और बच्चों के स्वास्थ्य और उनके कल्याण के लिए कार्य करें, जिससे शिक्षकों और बच्चों के स्वास्थ्य के साथ-साथ उनका सर्वांगीण विकास हो इस पर समझ बनी। यह मॉड्यूल समग्र स्वास्थ्य और कल्याण की धारणा पर केंद्रित है। इस मॉड्यूल के माध्यम से शारीरिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं को जाना।

राजू उइके प्रा.शिक्षक प्रा.शाला भादेटोला ओखरावल संकुल केंद्र कुम्हियाँ जिला सिंगरौली

निष्ठा प्रशिक्षण के माध्यम से बालकेन्द्रित शिक्षण, स्वास्थ्य तथा समावेशी शिक्षा पर हम सभी शिक्षकों की समझ विकसित हो रही है। नेतृत्व क्षमता का विकास करना, समाज के अन्य व्यक्तियों से कैसे बात करें और जिंदगी में सफलता कैसे हासिल करें। यही क्षमता विकसित करने में निष्ठा प्रशिक्षण मदद कर रहे हैं।

आनंद जैन
शा. मा. वि. रामबाड़ी ब्लॉक जिला श्योपुर

"शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में जेंडर आयामों की प्रासंगिकता" में प्रभावशाली ढंग से पाठ्यक्रम पठन-पाठन में जेंडर समावेशी कार्यप्रणाली को विकसित करने में और विद्यालय के वातावरण को जेंडर संवेदनशील बनाने में शिक्षकों और प्रधानाध्यापक की भूमिका को समझाया गया है। साथ ही कई प्रकार की गतिविधियां भी बताई गई हैं, जिनसे हमें सीखने के स्तर को बढ़ाने में काफी मदद मिलेगी। जेंडर समावेशी बनाने में यह मॉड्यूल एक महत्वपूर्ण योगदान देता है।

श्रीराम साहू प्रधानाध्यापक
जनपद पूर्व मा.शा. शहपुरा डिंडोरी

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में जेंडर आयामों की प्रासंगिकता मॉड्यूल में स्कूल के तारतम्य में जो शैक्षिक रणनीति पर चर्चा की गयी है, जेंडर और लिंग को कितनी सरलता से सटीक उदाहरणों द्वारा समझाया गया है। जिससे जेंडर संबंधी पूर्वाग्रह/सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया जा सकेगा। स्कूल में पढ़ाये जा रहे विषयों में जेंडर को समाकलित करते हुए शिक्षक और प्रधानाध्यापक की भूमिका को गुरुतर बनाया गया है।

झलकन सिंह पटैल (सहायक शिक्षक)
शा.प्र.शाला रामखेड़ी संकुल शा.उ.मा.विद्यालय करपगांव
विकासखंड चीचली जिला नरसिंहपुर

पाठ्यचर्या और समावेशी शिक्षा सभी शिक्षकों के व्यवसायिक विकास करने के उद्देश्य की पूर्ति के साथ-साथ बच्चों के लिए संसाधन बनाने और साझा करने में मदद करता है। इस प्रशिक्षण से हम राष्ट्रीय पाठ्यचर्या, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, समावेशी शिक्षा एवं इनके उद्देश्यों को आसानी से समझ सके हैं। समावेशी कक्षा शिक्षण द्वारा हम किस प्रकार सभी बच्चों को सम्मलित करते हुए पढ़ाने में कैसे सहायक हों, यह समझने में मदद मिली। यह प्रशिक्षण शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की समझ विकसित करने एवं समावेशी शिक्षा के सभी प्रमुख महत्वपूर्ण बिंदुओं से परिचित कराता है।

डाल सिंह इनवाती प्रा.शिक्षक प्रा.शा. महदेवा
संकुल केंद्र कुम्हियाँ बैढ़न जिला सिंगरौली

निष्ठा प्रशिक्षण से प्राप्त समझ के माध्यम से हम अपने विद्यार्थियों के लिए बेहतर एंव शिक्षक के लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से ऑनलाइन एवं ऑफलाइन गतिविधियों का समावेश करते हुए अकादमिक प्रगति व उपलब्धि सुनिश्चित कर सकेंगे तथा प्रशिक्षण के माध्यम से बच्चों का आकलन एवं मूल्यांकन कर समय से विषय वस्तु को सिखाने में सक्षम होंगे।

कु.आराधना चौहान मा.शि.
शा.मा.शाला पनारी नरसिंहपुर

"स्वस्थ विद्यालयी परिवेश निर्मित करने के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक योग्यता विकसित करना" माड्यूल विद्यार्थियों में सभी मानवीय मूल्यों को विद्यालयीन शिक्षा के दौरान विकसित करने पर विशेष बल देता है। जो आज की रोजगारोन्मुखी शिक्षा में कहीं लुप्त सा हो गया है। अमानवीय कृत्य मानव की विकृत मानसिकता का परिचायक है, जो कहीं ना कहीं अपराधियों के जीवन में उचित गुणात्मक शिक्षा, संवेदनशीलता, मार्गदर्शन आदि के अभाव का परिणाम होते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षा मनोविज्ञान पर आधारित यह कोर्स शिक्षकों पर शिक्षार्थियों के चरित्र निर्माण का अति महत्वपूर्ण दायित्व सौंपता है, जो वर्तमान समय में प्रासंगिक है।

श्रीमती रश्मि तिवारी प्राथमिक शिक्षक
प्राथ. शाला भंडरिया रोड खंडवा

समावेशित, समेकित जैसे कई नए शब्दों से परिचय हुआ, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या, गुप्त पाठ्यचर्या, समावेशी कक्षा निर्माण, पोर्टफोलियो एवं अतिरिक्त संसाधनों पर विस्तृत जानकारी मिली। अभी तक हमें कुछ चीजों की संक्षिप्त एवं धुंधली जानकारी थी या फिर किसी की बिल्कुल भी नहीं थी, किन्तु अब इस प्रशिक्षण के माध्यम से हमें काफी जानकारी हासिल हुई है।

सुनीता सोनी माध्यमिक शिक्षक शा.मा.शाला
टेकापार जनशिक्षा केंद्र करपगांव विकासखंड
चीचली जिला नरसिंहपुर

जेंडर संबंधी दृष्टिकोण के समावेश का उद्देश्य केवल महिलाओं से संबंधित मुद्दों को संबोधित करना या आत्मसम्मान को बढ़ावा देना ही नहीं है, बल्कि लड़कों के पितृसत्तात्मक समाज व शक्ति आधारित संबंधों की धारणा पर विचार करने में सक्षम बनाना भी है।

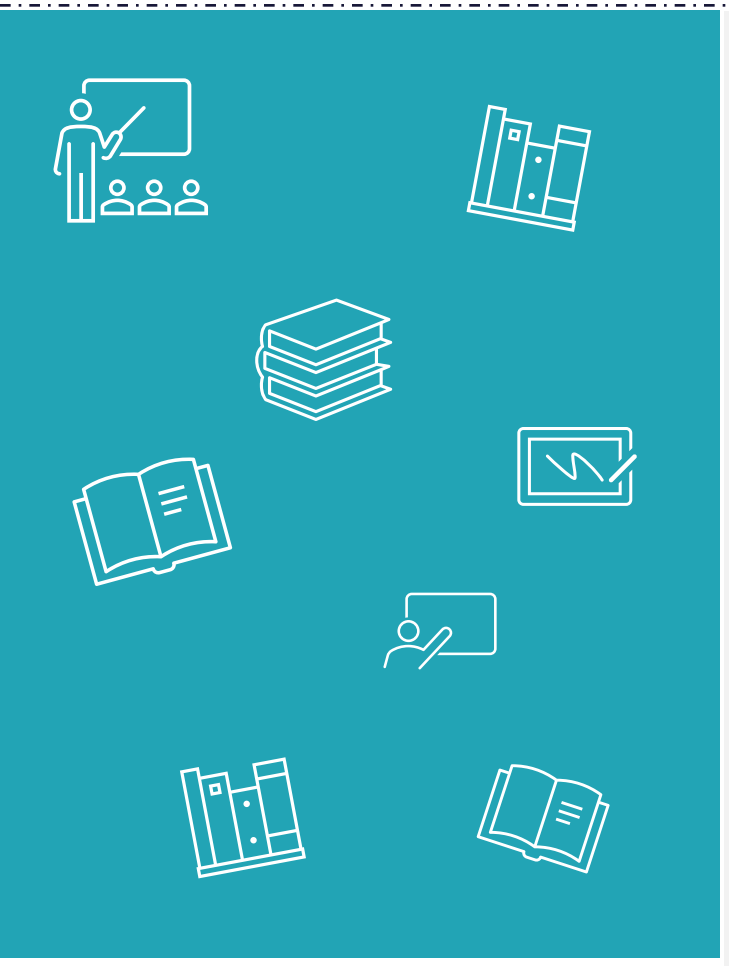

राकेश सिंह प्राचार्य
डाईट सीधी

पाठ्यक्रम में अमूर्त अनुभव के स्थान पर मूर्त अनुभव प्राप्त हो, बच्चे वास्तविक जीवन से जुड़ सकें, पूर्व ज्ञान को नवाचार से जोड़ सकें, परिवेश के साथ अंत:क्रिया करते हुए बच्चे सीख सकें, शिक्षक उपरोक्त प्रशिक्षण को ध्यानपूर्वक करेंगे तो उपरोक्त सभी अवधारणाओं को पूर्ण करने में सक्षम होंगे। शिक्षक अवधारणा के लिए सही गतिविधियों का चयन एवं बच्चों के अनुभवों को महत्व देते हुए उनके कौशलों का विकास कर सकेंगे और बच्चे भी विवेकपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम हो सकेंगे।

राजेन्द्र प्रसाद सोनी
बालक प्राथमिक शाला खलौड़ी जिला मंडला

निष्ठा प्रशिक्षण शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान प्रदान करके और उनके संज्ञानात्मक कौशलों को विकसित करके बल्कि व्यक्तिगत तथा सामाजिक संबंधों में प्रभावी ढंग से संवाद करने के कौशलों को विकसित करने, विद्यार्थियों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने में मार्ग प्रशस्त कर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ताकि विद्यार्थी अपने व्यक्तिगत-सामाजिक और शैक्षिक जीवन के हर स्तर पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सक्षम हों।

सोहन पटले GPS इंग्लिश मीडियम मेहंदिवाडा
बारासिवनी बालाघाट

पर्यावरण विषय की अध्यापन कार्य में अन्य विषयों को समाहित करना जैसे गणित सामाजिक विज्ञान एवं विज्ञान और बच्चों को उनके वास्तविक जीवन से जुड़े सामाजिक सांस्कृतिक राजनीतिक तथा पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाने तथा विषयगत वास्तविक घटनाओं से जोड़ने व इसे समझने में निष्ठा प्रशिक्षण बच्चों व शिक्षकों दोनों के विषय ज्ञान व अध्यापन कौशल को विकसित करने में एक अहम भूमिका अदा करेंगे।

प्रमोद कुमार सराठे

शा.प्रा.शाला बौछार विकासखंड - गोटेगांव जिला-नरसिंहपुर

निष्ठा प्रशिक्षण हम सभी शिक्षक साथियों के लिय इस कोविड-19 के दौर में एक नई ऊर्जा, नया उत्साह लेकर आया है। निष्ठा प्रशिक्षण में गतिविधियों (आफलाइन /आनलाइन) के माध्यम से एक नया आयाम हासिल हुआ है। पाठ्यचर्या समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत - अधिगम के प्रतिफल, गुप्त पाठ्यचर्या, शिक्षकों व छात्रों में व्यक्तिगत सामाजिक गुण विकसित होगें साथ ही संवेदनशील होने के साथ ही साथ शिक्षक संप्रेषण, कक्षा प्रबंधन और उचित अनुशासन तरीकों में कुशल/दक्ष होगें। निष्ठा प्रशिक्षण शालाओं में सकारात्मक अधिगम माहौल बनाने में अहम भूमिका निभाएगा।

बृजसिंह उईके माध्.शिक्. शा. मा. शाला मोहगांव तीतरी जनशिक्षा केंद्र बादलपार कुरई जिला सिवनी

एक नवाचारी तथा सृजनशील शिक्षक निष्ठा प्रशिक्षण में प्रस्तावित तथा अन्य सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं में जेंडर आयाम, पर्यावरण अध्ययन व गणित की अवधारणाओं का उपयोग कर बच्चों को सीखने सिखाने के प्रतिफल को प्राप्त करने में पूर्ण रूप से सक्षम सिद्ध हो रहे हैं।

रचना ठाकुर प्रा. शि.

शा.सरोजिनी नायडू कन्या उ.मा.वि. (एकीकृत शाला) वि.खं. बैरसिया जिला-भोपाल

कला समेकित शिक्षा के महत्व को समझ कर हमने जाना कि कलाएं किस प्रकार बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक हो सकती हैं। हम कला के माध्यम से बच्चों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को जानकर विभिन्न विषयों की शिक्षा को रोचक बना सकते हैं। यह मॉड्यूल सीखने और सिखाने की ऐसी प्रक्रिया पर आधारित है, जिसमें बच्चे 'कला के माध्यम से' और कला के साथ परिणाम की चिंता ना करते हुए भयमुक्त वातावरण में सीखते हैं, प्रोत्साहित होते हैं। इस मॉड्यूल के माध्यम से हमने विभिन्न विषयों के सीखने के प्रतिफलों को प्राप्त करने हेतु दृश्यकला एवं प्रदर्शन कला के महत्त्व को जाना, कला समेकित शिक्षाके माध्यम से मूल्यांकन करने की समझ बनी, जिसमें विषय के सीखने के साथ-साथ बच्चों के सामाजिक भावनात्मक विकास दोनों का आकलन कर सकते हैं।

रामराज पनिका प्रा.शिक्षक शा.प्रा. शाला खम्हरिया
जनशिक्षा केंद्र कुम्हियाँ सिंगरौली

निष्ठा प्रशिक्षण बहुत ही रोचक है, यह प्रशिक्षण शिक्षाविदों द्वारा तैयार कर बहुत बेहतर तरीके से उपलब्ध कराया गया है, निष्ठा प्रशिक्षण का मुख्य लक्ष्य शिक्षकों के ज्ञान व कौशल निर्माण को और अधिक समृद्ध बनाना है। प्रत्येक प्रशिक्षण पूर्ण करने के उपरान्त शिक्षकों ने प्रशिक्षण से जो सीखा उसे पाठ्यक्रम के माध्यम से बच्चों तक पहुँचाना है ताकि इनके व्यक्तित्व एवं सामाजिक गुणों को बढ़ाने में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।

सत्येंद्र जैन BAC अमरवाड़ा
जिला छिंदवाड़ा

शिक्षकों को शिक्षा की मुख्य धारा में बनाए रखने एवं विद्यालय स्तर पर छात्रों को बेहतर सीखने, दक्षता एवं कौशल विकास के अवसर प्रदान कराने के लिए शिक्षक द्वारा औपचारिक एवं अनौपचारिक रूप से आकलन में लचीलापन लाकर किस प्रकार से विद्यालय आधारित मूल्यांकन किया जाए, इसकी समझ एवं अवधारणा स्पष्ट हुई। उक्त प्रशिक्षण द्वारा हम कक्षा संचालित करते समय छात्र-छात्राओं में आकलन से पूर्ण दक्षता एवं कुशलता प्राप्त करेंगे। यह प्रशिक्षण हमारे कक्षा प्रबंधन, छात्रों का बेहतर प्रदर्शन एवं सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति एवं छात्र छात्राओं द्वारा विषय एवं अवधारणा का दैनिक जीवन में उपयोग करने में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

लोलर सिंह, प्राथमिक शिक्षक प्रा.शा.जुड़बनिया
टोला जनशिक्षा केंद्र कुम्हियाँ सिंगरौली

निष्ठा प्रशिक्षण ने पठन-पाठन प्रक्रिया में हम सभी शिक्षकों को एक नई दिशा एवं सोच प्रदान करने के साथ-साथ ज्ञान एवं कौशलों को प्रत्येक बच्चों तक कैसे पहुंचाया जाए आदि पर भी मार्ग प्रशस्त किया है, बच्चों में वास्तविक गुणात्मक विकास में योगदान देने के लिए एक उत्कृष्ट अनुभव प्रशिक्षण से प्राप्त हो रहा है। बच्चों एवं अभिभावकों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार और उनके साथ सकारात्मक सोच रखते हुए बदलाव का बल भी मिल रहा है।

सोबरन सिंह मेहरा प्रा. शि.
शा. प्रा. शाला नन्हेंगाँव वि.ख. गोटेगांव, नरसिंहपुर

निष्ठा प्रशिक्षण शिक्षक के समग्र विकास और कौशलों को विकसित करने हेतु तय किया गया कार्यक्रम है। इस प्रशिक्षण के केन्द्र में बच्चों को रखा गया है ताकि बच्चों को इसका लाभ मिल सके| एक शिक्षक को शिक्षण के दौरान शिक्षण प्रक्रिया को बाल केन्द्रित बनाने का पूर्ण प्रयास करना है। निष्ठा प्रशिक्षण से शिक्षकों का व्यवसायिक विकास, गुणवत्ता विकास करने के साथ-साथ उपलब्ध संसाधनों का बच्चों के हित में ऑफलाइन और आन-लाइन सर्वाधिक उचित उपयोग करते हुए बच्चों को निरंतर सहयोग और समर्थन प्राप्त होता है।

राजेश त्रिवेदी
प्रशिक्षण शाखा ,डाइट श्योपुर

विद्यालय आधारित आकलन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान समग्र रूप से सीखने के प्रतिफल के संदर्भ में निर्दिष्ट दक्षताओं को प्राप्त करने की सुविधा प्रदान करता है, साथ ही विद्यालय आधारित आकलन सीखने के लिए आकलन की व्यापक प्रक्रिया में निहित है। आकलन बच्चे की सीखने की प्रगति का निरीक्षण करने, समय पर प्रतिक्रिया देने और बच्चों की कठिनाइयों को दूर करने में शिक्षकों की सहायता करता है। विद्यालय आधारित आकलन शिक्षण अधिगम का अभिन्न अंग है।

मुकेश गोयल सहायक शिक्षक
मा. वि. चौबारा धीरा जिला देवास

रुब्रिक्स एक ऐसा उपकरण है जिसके द्वारा निर्धारित मानदण्डों के आधार पर विद्यार्थियो के सीखने का आकलन किया जाता है। यह शिक्षक और विद्यार्थी दोनों के लिए सहायक है क्योंकि यह अंत में विद्यार्थी को क्या सीख जाना चाहिए, इसके लिए किए जा रहे प्रयासों में सुधार का मार्ग प्रशस्त करता है, जिससे अधिगम में वृद्धि होती है। विद्यार्थियों को पहले से रुब्रिक सौंप देना चाहिये, जिससे उनको यह पता रहे कि उनका मूल्यांकन किन मापदण्डों पर होगा जिन्हें फोकस करते हुए वे सीखने की गतिविधियों को कर सके।

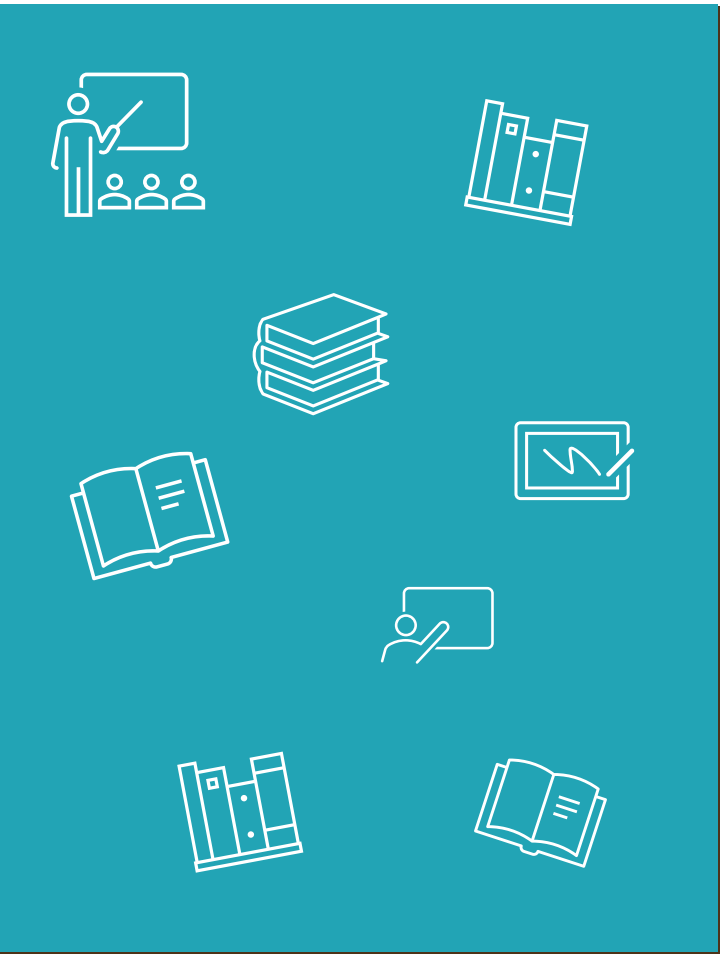

श्रीमती हेमलता वर्मा
शा.मा. शा. गुबरा ब्लॉक जबेरा, जिला दमोह

बच्चों की अपनी स्वतंत्र दुनिया है, बच्चे कहानियां, गीत, कविता से जब परिचित होते हैं तो वह अपनी दैनिक दिनचर्या को अपने अनुभवों से जोड़ने का प्रयत्न करते हैं और ये क्रियाकलाप नए ज्ञान को अर्जित करने, उसका निर्माण करने में सहायता करते हैं। हम सब बहुत से कौशलों को तभी सीख पाते हैं जब हम उनका उपयोग बार-बार करते हैं, अतः हम शिक्षकों को भाषा शिक्षण में ऐसी प्रक्रियाओं की शुरुआत करनी चाहिए जो बच्चों को भाषा सीखने के साथ-साथ विषय सामग्री को पढ़ने, समझने और समझ बनाने में बच्चे की सहायता कर सकें।

लखन सिंह ठाकुर जनशिक्षक शा.उ.मा.वि.कुरावर
विकास खंड आष्टा जिला सीहोर

सामाजिक विज्ञान जैसे बहुआयामी एवं अंतर विषयक संबंधी विषय को किस प्रकार से सरल, सहज एवं रुचिकर तरीके से पढ़ाया जाए जिससे कि छात्र-छात्राओं में रुचि उत्पन्न हो एवं सक्रिय भागीदारी से विषय की दक्षताओं के साथ-साथ दैनिक जीवन एवं व्यवहार में भी विषय अवधारणा व समझ का उपयोग कर सकें, इस प्रकार की कार्यात्मक व परियोजनात्मक शिक्षण कौशल की समझ शिक्षकों में इस मॉड्यूल से बनी है। वे अपना विषय शिक्षण रुचिकर तरीके से कराएंगे।

अजब सिंह राजपूत BRCC
जनपद शिक्षा केंद्र आष्टा जिला सीहोर

इस मॉड्यूल से हमने जाना कि विज्ञान का ज्ञान प्रारंभिक स्तर से ही छात्र-छात्राओं को किस प्रकार दिया जाए जिससे कि वह अपनी विषय अवधारणा के साथ-साथ विज्ञान में रुचि उत्पन्न कर वैज्ञानिक सोच और वैज्ञानिकता की ओर उन्मुख हो सके कक्षा एवं कक्षा से बाहर छात्र छात्राओं को विभिन्न गतिविधि के माध्यम से शिक्षण कार्य कराए जाने की आवश्यकता है। जिससे कि वे विषय की कक्षाओं को सीख सकें एवं सीखने के प्रतिफल को प्राप्त किया जा सके साथ ही उनकी आवश्यकताओं को भी जाना जा सके।

रामगोपाल रैकवार कनिष्ठ व्याख्याता, डाइट कुंडेश्वर टीकमगढ़

(Module 12)यह कोर्स शिक्षकों के लिए अत्यंत उपयोगी है, इसमें विज्ञान क्या है, और इसे बढ़ाने के क्या उद्देश्य हैं, बेहतर ढंग से उदाहरण के साथ समझाया गया है। आवाज तथा पेड़ पौधों की समझ के लिए व्यवहारिक प्रदर्शन से शिक्षकों को गतिविधि पूर्ण शिक्षण की प्रेरणा मिलती है। यह कोर्स करने के बाद कक्षा में बच्चों को पढ़ाने में काफी मदद मिलेगी।

बलवीर सिंह कौरव मा. शि.
शा. मा. वि. वाबन पाएगा (आनंद नगर)
मुरार शहर जिला ग्वालियर

यह कोर्स शिक्षक के लिए सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों को पढ़ाने में काफी मददगार होगा इस कोर्स में ग्लोब के माध्यम से अक्षांश व देशांतर रेखाओं, पृथ्वी पर विभिन्न देशों की स्थिति का पता लगाने को काफी सरल तरीके से बताया गया है। अतीत को समझने के लिए सिक्कों तथा अन्य स्रोत का जो उदाहरण दिया गया है। वह काफी रुचिकर तथा प्रभावी रूप से शिक्षण अधिगम में मददगार होगा इस कोर्स के अंत में पोर्टफोलियो के पश्चात दी गई सुझावात्मक गतिविधियां के आधार पर अन्य पाठ्यक्रम की गतिविधियां बनाने में सहायता मिलेगी जो हमारे शिक्षण अधिगम को और सरल बना देगा माँक संसद के रूप में दी गई जानकारी एवं आंकड़े राजनीतिक व्यवस्था के बारे में ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान करती है।

रीता शर्मा प्राथमिक शिक्षक
शा. प्राथमिक विद्यालय ओहद पुर, मुरार ग्वालियर

मॉड्यूल क्रमांक 12 (विज्ञान का शिक्षा शास्त्र) इस मॉड्यूल में विज्ञान के शिक्षकों के लिए बहुत ही उपयोगी सामग्री दी गई है। इस मॉड्यूल में बताया गया है कि शिक्षक कैसे बेहतर ढंग से छात्रों के साथ विज्ञान की समझ को विकसित कर सकते हैं। साथ ही साथ विज्ञान के नए-नए प्रयोगों द्वारा छात्रों की समझ विकसित करना भी इस मॉड्यूल में बताया गया। मॉड्यूल में पेडागॉजी वीडियो एवं लिखित सामग्री के माध्यम से भी इन्ही बातों को अच्छी तरह से समझाया गया।

श्रीमती मुक्ता गुप्ता व्याख्याता
डाइट सीहोर

"भाषा, प्रभावी संचार का माध्यम है। मौखिक भाषा व्यक्तिगत परिवार एवं परिवेश से बिना विशेष प्रयास से सीखता है। भाषाई कौशल सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, चिंतन, स्वतंत्र अभिव्यक्ति व्याकरण नियमों के आधार पर भाषाशास्त्र का अध्ययन अध्यापन कराना, बहुभाषी छात्र की कक्षा संचालन व भाषा अध्यापन प्रथम भाषा के अलावा द्वितीय तृतीय भाषा में अंतर व किस प्रकार से बच्चों में धाराप्रवाह कुशलता दक्षता प्रदान की जाए सभी विषय शिक्षण में भाषा का महत्व भाषा की विविध विधाओं व गतिविधि के द्वारा व्याकरण का ज्ञान बच्चों का भाषाई कौशल व उनका आकलन, भाषा शिक्षण शास्त्र मॉड्यूल के माध्यम से कक्षा को गतिविधि में क्रियात्मक व रुचि कारक बनाने की समझ शिक्षकों में बनी है।

सुंदरलाल सूर्यवंशी

शा. मा. शाला चिखली मुकासा विकासखंड अमरवाड़ा
जिला छिंदवाड़ा म. प्र.

(Module 11) यह मौजूद शिक्षकों को भाषा की बारीकियों को समझने के लिए एवं विद्यार्थियों को अन्य विषयों के साथ जोड़ने के लिए भाषा में पारंगत करने एवं समस्त विषयों को सम्मिलित करने के लिए बहुत ही मददगार साबित हो रहा है। यह भाषा की अवधारणा को समझने, भाषा का ज्ञान, व्याकरण में ज्ञान की आवश्यकता को समझने में शिक्षकों को मदद करेगा। NCF-2005 में जोर देकर यह बताया गया है कि भाषा शिक्षण हमारे विषय का शिक्षण है। सारे विषयों का शिक्षक भाषा का शिक्षक होता है।

सुमित गर्ग मा. शि. शा. पुरवार कन्या मा.वि.
सिविल लाइन ब्लॉक एवं जिला कटनी

शिक्षण कार्य की प्रक्रिया का विधिवत अध्ययन शिक्षाशास्त्र या शिक्षण शास्त्र कहलाता है। इसके अंतर्गत अध्यापन के तौर तरीके, शैलियां, रणनीतियां और विधियों- प्रविधियों का अध्ययन विस्तृत रूप से किया जाता है। निष्ठा ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम अंतर्गत भाषा, पर्यावरण अध्ययन, गणित, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान विषय के शिक्षाशास्त्र संबंधी प्रशिक्षण निश्चित रूप से हमारे शैक्षणिक जीवन में मील का पत्थर साबित होंगे। इससे हम इन विषयों की प्रविधियों को बारीकी से जानकर अपने तथा विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर को उत्कृष्ट बनाने में समर्थ होंगे।

कल्पना विश्वकर्मा प्रा.शि. प्रा. शा. बावली
विकास खण्ड- गोटेगाव, जिला- नरसिंहपुर

निष्ठा माड्यूल 11 (भाषा का शिक्षण शास्त्र) बच्चों की स्थानीय बोली उनकी पहली मातृभाषा होती है, बच्चे जैसे-जैसे बड़े होते हैं औपचारिक, अनौपचारिक रुप से कई और भाषाएं सीखते हैं। हमें एक शिक्षक के रूप में यह समझने की जरूरत है कि बहुभाषी कक्षा में भाषाई निवेश करने के लिए समृद्ध संचार माध्यमों (आई. सी. टी.) का समुचित उपयोग, निष्पादन करना होगा। ये माध्यम भाषा सीखने में मददगार हैं। भाषा से जुड़ाव के लिए हमें कहानी, कविता, पहेलियाँ, मुहावरे आदि के माध्यम से भाषा शिक्षण कराना चाहिए जिससे बच्चों में सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना (L.S.R.W.) आदि कौशलो का विकास हो सके। इनमें आये शब्दो से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि व्याकरण का बोध हो सके। शिक्षार्थी तर्क, विश्लेषण, रचनात्मक तरीके व संदर्भों को आरेखित कर अर्थ निर्माण करने में सक्षम हो सके।

दीपक शर्मा मा. शि.
शा. मा. विद्यालय शिव मंदिर घोसीपुरा ग्वालियर

विज्ञान का शिक्षा शास्त्र (निष्ठा मोड्यूल-12) में उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान को पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए उपयोगी सामग्री पर प्रकाश डाला गया है। इसमें बताया गया है कि अनुभव और गतिविधियों के माध्यम से बच्चे विज्ञान से भलीभांति परिचित हो सकेंगे। मॉड्यूल में पेडागॉजी, वीडियो के माध्यम से भी शिक्षकों के लिए उपयोगी बिंदु भी बताए गए जो छात्रों के लिए विज्ञान की समझ को सरल एवं सुगम बनाएंगे। इस मॉड्यूल में विज्ञान विषय को सरल तरीके से पढ़ाने का तरीका भी बताया गया।

बलवीर सिंह कौरव मा. शि. शा मा वि
वाबन पाएगा (आनंद नगर) ब्लॉक-मुरार शहर
जिला -ग्वालियर

निष्ठा प्रशिक्षण कोर्स 13 विद्यालय नेतृत्व: संकल्पना और अनुप्रयोग इस कोर्स से हमने बहु-भूमिकाओं, दायित्वों एवं नेतृत्व के दृष्टिकोण को समझने व उसे विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करने के कौशल जाने। कुशल नेतृत्व का गुण ही प्रभावी लर्निंग-अधिगम के साथ-साथ व्यावहारिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कुशल नेतृत्व का होना अध्यापक के साथ-साथ विद्यालय प्रमुख के लिए भी नितांत जरूरी है। यह छात्रों में सर्वांगीण विकास का द्योतक होता है।

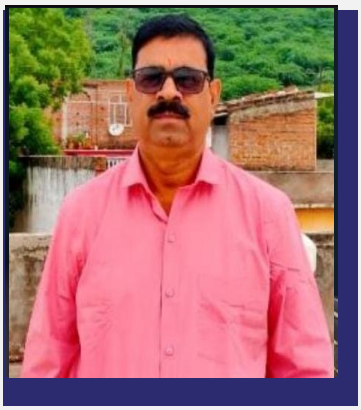

राजेश कुमार पटेरिया BRC

जनपद शिक्षा केंद्र निवाड़ी जिला निवाड़ी

विद्यालय नेतृत्व निष्ठा प्रशिक्षण 13 विद्यालय नेतृत्व की अवधारणा के द्वारा विद्यालय का एवं बच्चों का समग्र विकास किया जाना संभव है। विद्यालय नेतृत्व का विचार जो पहले मात्र अनुशासन बनाए रखना समझा जाता था परंतु विद्यालय नेतृत्व अकादमिक के साथ-साथ शिक्षकों एवं छात्रों के विकास को रूपांतरण करने में सक्षम है, जिससे छात्र के सीखने के अधिगम पर सकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है। इसमें विभिन्न प्रकार की प्रशासनिक गतिविधियों में भाग लेना एवं विद्यालय के सर्वांगीण विकास में एक विद्यालय प्रमुख एवं शिक्षकों को उनकी भूमिका के रूप में सरल एवं सुगम तरीके से समझाया गया है, जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव है।

श्रवण सिंह चन्देल BRC

जनपद शिक्षा केंद्र, जावद, जिला- नीमच

निष्ठा प्रशिक्षण अंतर्गत मोड्यूल 12 विज्ञान विषय का शिक्षा शास्त्र बहुत ही उपयोगी है। वास्तव में शालाओं में विज्ञान शिक्षण का सही तरीका लागू करना आज की महती आवश्यकता है। विज्ञान, ज्ञान की समस्त परतों को समझाता है। विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास किस प्रकार किया जावे, यह इस मोड्यूल की विषयवस्तु से स्पष्ट हुआ। विज्ञान शिक्षण कभी भी सिर्फ शाला के कक्ष में सीमित न होकर व्यापकता के साथ गतिविधि आधारित होना चाहिए, विद्यार्थी के मन मस्तिष्क में वैज्ञानिक नवाचारों की क्रमबद्ध श्रृंखला की जिज्ञासा का पैदा होना ही विज्ञान शिक्षण की सफलता है। यह मोड्यूल बच्चों, शिक्षकों और अवलोकनकर्ताओं के लिए बहुत ही लाभदायक है।

विजय सिंह जायसवाल प्रा. शि.

प्रा. शा. पिपलिया कैलाश विकासखंड आष्टा, जिला सीहोर

मॉड्यूल क्रमांक 12 विज्ञान का शिक्षा शास्त्र विज्ञान की अवधारणा, कक्षा शिक्षण व परिवेश आधारित विभिन्न गतिविधि शिक्षण, निर्धनता, अंधविश्वास कुरीति दूर कर वैज्ञानिक सोच, जेंडर, विभिन्न प्रकार का समावेशी शिक्षण, छात्र-छात्राओं में विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न करना, वैज्ञानिक सोच व विज्ञान को परिवेश एवं व्यवहार में लाने की धारणा विकसित हुई, वहीं सीखने के प्रतिफल, आकलन को तत्काल जानने की कुशलता प्राप्त हुई। उक्त मॉड्यूल के द्वारा विज्ञान का यथार्थ शिक्षण कार्य हम कक्षा, कक्षा के बाहर छात्रों को परिवेश से जोड़ने में पूर्ण रूप से सक्षम होंगे।

राकेश अग्रवाल APC (A)

जिला सीहोर

कोविड-19 संक्रमण काल जैसी अप्रत्याशित परिस्थितियों में बच्चों की सुरक्षा व्यवस्था को बनाए रखते हुए उनकी शिक्षण व्यवस्था को भी बनाए रखने के संबंध में उचित निर्णय करने की क्षमता विद्यालय नेतृत्व कर्ता और शिक्षकों को अपने आप में विकसित करना होगी। इसके लिए विद्यालय नेतृत्व कर्ता को चाहिए कि शाला प्रबंधक के रूप में वह विद्यार्थियों शिक्षकों एवं समुदाय को विश्वास में लेकर नई चुनौतियों का सामना करने के लिए शाला स्तर पर शिक्षण योजना तैयार करें| शाला स्तर पर उच्च स्तर द्वारा जो शिक्षण योजना दी जाती है। वह सुझावात्मक एवं मार्गदर्शक हो सकती है, किंतु इससे परे जाकर व्यवहारिक रूप से इन्हें कार्य व्यवहार में लाने के लिए शाला को अपनी शिक्षण योजना बनाना बहुत अनिवार्य हो जाता है और यह तभी संभव है जब विद्यालय नेतृत्व करता एवं शाला शिक्षक सब आगे आकर अपनी शाला के बच्चों हेतु चिंतन करें और निर्मित योजना पर तदनुसार कार्य करें।

श्रीमती विनीता मेहरा
शा.प्रा. शाला -बम्हनी (करकबेल)
वि.ख. गोटेगांव, जिला- नरसिंहपुर

निष्ठा प्रशिक्षण 13 "विद्यालय नेतृत्व संकल्पना और अनुप्रयोग" नेतृत्व वह प्रतिभा है, जिससे अपेक्षित उद्देश्यों की पूर्ति की जा सकती है, चूंकि यहाँ विद्यालय के संदर्भ में नेतृत्व की बात है-यह एक चुनौती पूर्ण कार्य है। संस्था प्रमुख/अध्यापक सबसे पहले विद्यालय के अपेक्षित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बालकेन्द्रित व अच्छे से अच्छा माहौल बनाकर सकारात्मक सोच, सृजन व नवाचार से सभी को विश्वास में लेकर विद्यालय के सभी शिक्षकों, छात्रों, एस. एम. सी व समुदाय में आत्मविश्वास जागृत कर शिक्षण अधिगम पूर्ण कर, एक आदर्श विद्यालय
के सभी कार्यों को संपादित कर सकते हैं। साथ ही अकादमिक सहयोग
व मार्गदर्शन से विद्यालय की नींव को सफलता के शिखर
तक पहुंचा सकते हैं।

सुश्री मनोरमा पाठक (स. शि.)
शा. प्रा. शाला देवरी ,विकास खंड - गोटेगांव, जिला नरसिंहपुर

निष्ठा माड्यूल 15 पूर्व प्राथमिक शिक्षा पूर्व प्राथमिक शिक्षा वह नींव है, जो बच्चे के समग्र विकास में सहायक होती है। बच्चे के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण आयाम है - शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक,संज्ञानात्मक, प्रारंभिक साक्षरता और रचनात्मकता। ये आयाम पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम को उनकी पाठ्यचर्या के अनुसार इस प्रकार ढालने में मदद करते हैं, ताकि बच्चों को प्राथमिक कक्षा के लिए तैयार करने में मदद मिल सके। पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में बच्चों के माता-पिता व समुदाय को भागीदार बनाना आवश्यक है ताकि बच्चों ने पूर्व प्राथमिक कार्यक्रम में जो समझा और सीखा उसे घर में भी उसी प्रकार सीखने के अवसर मिलें।

देवेन्द्र कुल्हारा CAC ,JSK शा. क.उ.मा. वि.
सिविल लाईन ब्लॉक व जिला कटनी

एक नेतृत्वकर्ता के रूप में विद्यालय प्रमुखों को अतिरिक्त जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता है। विद्यालय नेतृत्व अध्यापकों को प्रभाविकारी तरीके से शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को संचालित करने के लिए वातावरण का निर्माण तथा पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराकर, साथी शिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों तथा समुदाय के महत्वपूर्ण लोगों के बीच संवाद स्थापित करके और अपने विद्यालय के सम्पूर्ण विकास व छात्रों के अधिगम में उत्तरोत्तर वृद्धि करके वैश्विक स्तर के विद्यालय स्थापित करने में सहायक होगा।

विनोद तिवारी प्रा. शि.
शा.प्रा. शा. नई आबादी अमरवाड़ा जिला छिंदवाड़ा

पूर्व व्यवसायिक शिक्षा को नई शिक्षा नीति में कक्षा 1 से 12 तक सम्मिलित किया गया है। निश्चित ही यह भारत की युवा पीढ़ी के लिए उनके सपनों को साकार करने में मददगार होगी। कक्षा 1 से 5 तक छात्र कार्य अनुभव के माध्यम से, कक्षा 6 से 8 तक पूर्व व्यवसायिक शिक्षा एवं कक्षा 9 से 12 तक व्यवसायिक शिक्षा के माध्यम से छात्र अपने जीवन और उसमें किए जाने वाले कार्य को समझबूझ से करने में सफल होंगे तथा अपने और देश के भविष्य को विश्व पटल पर अच्छी तरह प्रदर्शित कर पाएंगे।

रमेश परमार JSK शा. उ. मा.वि. कुराबर विकास खंड आष्टा जिला सीहोर

पूर्व प्राथमिक शिक्षा बच्चों के शिक्षण की आधारशिला है जो उन्हें आगे के शिक्षण के लिए रूपांतरण/संयोजन का कार्य करती है। जो बच्चे पूर्व प्राथमिक स्तर पर अच्छे शैक्षणिक परिवेश से जुड़ जाते हैं उनकी शैक्षणिक गुणवत्ता एवं भावी जीवन की उन्नति सुनिश्चित हो जाती है। मॉड्यूल से पूर्व प्राथमिक शिक्षा एवं नई शिक्षा नीति 2020 की अवधारणा शिक्षकों में स्पष्ट रूप से बनी है। सामग्री बहुत ही स्पष्ट रही है, यह हमारी शालाओ के बच्चों की मूलभूत दक्षताओं की प्राप्ति में मदद करेगी। जिससे हम बच्चों का सर्वांगीण विकास कर भविष्य के लिए तैयार करने में सक्षम होंगे।

पंकज कुमार बर्मन CAC JSK भदौरा न 1

विकासखंड बड़वारा जिला कटनी

प्री स्कूल में जाना एक बच्चे के जीवन की नयी शुरुआत के लिए एक छोटा कदम है। यह पहला अभ्यास है, जिसमें बच्चे अपने माता-पिता के आराम और सुरक्षित क्षेत्र से अलग हो जाते हैं। यह विशेष जगह है जो बच्चे के लिए एक दूसरा घर होता है। एक जगह, जिसमें बच्चे को सहज और सुरक्षित महसूस करने और आकर्षित करने के लिए पर्याप्त सामग्री है। निष्ठा मॉड्यूल 15 पूर्व प्राथमिक शिक्षा से हमें - यह क्या है, इसकी आवश्यकता क्यों हैं, महत्त्व उद्देश्य, बच्चे कैसे सीखते हैं व इनका मूल्यांकन कैसे किया जाए ,साथ ही विकास के आयाम की जानकारी देती है। हम इस मॉड्यूल के आधार पर अपने अनुभव और गतिविधियों के माध्यम से एक योजना तैयार करके इन बच्चों के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं।

रघुवीर गुप्ता D R G निष्ठा
डाइट श्योपुर

जब हम हिंदी कविता या कहानी पाठ को उचित उतार-चढ़ाव लय और ताल के साथ पढ़ाते हैं तो बच्चों के चारो कौशल सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना साथ-साथ चलते हैं और बच्चे भाषा व्याकरण को सहज ही सीख जाते हैं| एक भाषा शिक्षक को बहुभाषी होना चाहिए ताकि वह बच्चों के विचारों को उचित स्थान दे सकें तथा शिक्षण को रोचक प्रभावी व आनंदमय बना सके प्रत्येक विषय शिक्षक, एक भाषा शिक्षक भी होता है, बिना भाषा के किसी भी विषय को पढ़ाने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

माया चौरसिया
शा. प्रा. शाला बावली JSK सूरवारी
विकासखंड - गोटेगांव नरसिंहपुर

गणित गणनाओं का विज्ञान है, गणित की प्रकृति हमें मूर्त रूप से अमूर्त रूप की ओर ले जाती है| प्राथमिक स्तर पर गणित का शिक्षण कराने का एक तरीका ELPS है, जिसके द्वारा हम बच्चों को कर्म से अनुभव, भाषा, चित्र और अंत में प्रतीक के द्वारा बेहतर तरीके से सीखना सिखाना करा सकेंगे| गणित को रुचिकर बनाने के लिए भागीदारी जुड़ाव अवलोकन व तर्क पद्धति आदि को शामिल किया जाना चाहिए, जिससे शिक्षक आसानी से छात्रों को सीखने के अधिगम प्रतिफल पूर्ण करा सकते हैं।

राजेंद्र कुमार सोनी
EPES खेम विकासखंड गोटेगांव
जिला नरसिंहपुर

विद्यालय प्रमुख और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल निष्ठा प्रशिक्षण कार्यक्रम द्वारा भाषा में विज्ञान विषय का प्रशिक्षण प्राप्त करने से शिक्षकों को जो ज्ञान प्राप्त हुआ है। उसका उपयोग कक्षा में करने से बच्चों का संज्ञानात्मक, संवेगात्मक एवं भावनात्मक विकास करने में बहुत सहायता होगी। पर्यावरण के अंतर्गत सभी विषयों को समाहित करने से बच्चों को आसानी से सभी विषयों का अध्यापन कराया जा सकता है, क्योंकि सभी बच्चे अपने आसपास के वातावरण से बहुत कुछ आसानी से सीख जाते हैं। जरूरत इस बात की है कि सभी विषयों का समावेश शिक्षक अपनी शिक्षण योजना बनाने में करें एवं सीखने के प्रतिफल को प्राप्त करने के लिए ध्यान केंद्रित कर कक्षा में शिक्षण कार्य कराएं।

मनीष कुमार सोनी स. शि.
शा. प्रा. शाला खरखरी नं. 1
जनपद व जिला कटनी

विज्ञान, जिसकी अवधारणाओं, सिद्धांतों को समझना एक जटिल प्रक्रिया समझा जाता रहा है, इसे सरल और व्यावहारिक तरीके से किस प्रकार पढ़ाया जावे, जिससे विद्यार्थियों में रुचि और सक्रियता बढ़ सके| साथ ही विषय की प्रकृति की समाज का विकास हो, विद्यार्थी केवल परिभाषाओं तक सीमित न रहे बल्कि स्वयं के अवलोकन और अनुभव से विज्ञान की तकनीकी को समझ सके एवं शिक्षण कौशल की समझ हमें इस मौजूदगी से मिली है।

निधि चतुर्वेदी शा. मा. शाला रॉबर्ट लाइन कटनी
विकासखंड एवं जिला कटनी

NCF -2005 के मार्गदर्शन पर आधारित इस प्रशिक्षण को करने के बाद मेरी कक्षा अधिगम शिक्षण की समझ का विकास हुआ है, जिसके अनुसार प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर बच्चा किसी भाषा को आसान तरीके से तभी सीखता है, जब भाषा उसके लिए मजेदार हो, उसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हो और लेखन के अन्वेषण के लिए शिक्षकों द्वारा उसे प्रोत्साहित किया जाता हो, इसके साथ ही मैंने जाना कि बहु भाषाई ज्ञान बच्चों की रचनात्मकता
को बढ़ाता है।

देवेंद्र कुमार मर्सकोले प्रा.शि.
प्रा. शा. दरगडा JSK बादल पार
विकासखंड कुरई जिला सिवनी

हम सभी जानते हैं कि स्वास्थ्य आज के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। इस कोविड-19 महामारी ने हमें एहसास दिलाया है कि हर व्यक्ति को स्वास्थ्य के विभिन्न पहलुओं के बारे में जागरूक होना चाहिए और जीवन जीने के स्वस्थ तरीकों के आधार पर काम करना चाहिए। विद्यालय में स्वास्थ्य और कल्याण मॉड्यूल समग्र स्वास्थ और कल्याण की धारणा पर केंद्रित है। इस मॉड्यूल से स्वस्थ विद्यालय परिवेश निर्मित करने के लिए निष्ठा प्लेटफार्म पर उपलब्ध माड्यूल से बच्चों के साथ चुनौतीपूर्ण स्थितियों का सम्मान करने और प्रभावी ढंग से पारस्परिक संबंधों का प्रबंध करने एवं स्वस्थ वातावरण निर्मित करने में बहुत मदद मिलेगी।

राघवेंद्र सिंह राजपूत BAC
जनपद शिक्षा केंद्र सागर

यह कोर्स सभी विषय के शिक्षकों के लिए काफी महत्वपूर्ण है। इस कोर्स को करने के पश्चात भाषा सीखने की प्रकृति, सीखने में भाषा की भूमिका शिक्षकों के सीखने की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है। कोर्स में दिए गए उदाहरण काफी रोचक हैं, तथा शिक्षण अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करते हैं। देश में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाओं के बारे में दी गई जानकारी काफी ज्ञानवर्धक है। भाषा में अच्छी पकड़ बनाने के पश्चात कोई भी विद्यार्थी अन्य विषयों को आसानी से समझ सकता है, इसीलिए भाषा सीखना विद्यार्थियों के लिए सर्वोपरि है।

यू. एस. पटेल
EPES मा. शा सनगापुर
JSK करकबेल विकास गोटेगांव, नरसिंहपुर

भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार एक दूसरे से प्रकट कर सकता है। भाषा सीखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है व्याकरण सीखना। यद्यपि हिंदी व्याकरण सिखाने का सबसे अच्छा तरीका है कि शिक्षक कक्षा में छात्रों के सामने किसी ना किसी एक विधा को रखे, जिसमें भाषा सिखाने के चारों कौशल को समाहित होना चाहिए। शिक्षक चाहे तो विधा में कविता, नाटक, एकांकी, निबंध या स्थानीय व्यक्तियों द्वारा स्वरचित कृति, जो छात्रों को आनंददायी व रुचिकर लगे, भी ले सकते हैं। उसके बाद उस विधा या कृति में आए शब्दों व वाक्य संरचना में आए क्रिया, संज्ञा, विशेषण, लिंग, वचन, काल आदि द्वारा शिक्षक आसानी से छात्रों को सीखने के अधिगम प्रतिफल पूर्ण करा सकते हैं।

राज्य शिक्षा केंद्र
स्कूल शिक्षा विभाग
मध्य प्रदेश

समग्र शिक्षा

DIKSHA

15 अक्टूबर 2020- 16 फ़रवरी 2021

CM RISE
नए क्षितिज
डिजिटल शिक्षक प्रशिक्षण

एन सी ई आर टी
NCERT

NISHTHA ONLINE

धन्यवाद!

peepul™

SBI MUTUAL FUND
A PARTNER FOR LIFE

SBI FOUNDATION
Service Beyond Banking
...के सहयोग से